आखर हिंदी पत्रिका e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 3/सितंबर 2022
Received: 22/09/2022; Accepted: 23/09/2022; Published: 24/09/2022

लेख

मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में राष्ट्रीयता का प्रखर स्वर

- डॉ. सुमा टी. रोडनवर
सहायक प्राध्यापिका एवं समंवयक,
हिंदी विभाग,
युनिवर्सिटि कॉलेज, हम्पनकट्टा,
मंगलूरु

डॉ. सुमा टी. रोडनवर, मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में राष्ट्रीयता का प्रखर स्वर, आखर हिंदी पत्रिका, खंड2/अंक 3/सितंबर 2022,(241-244)

हमारे देश में राष्ट्रीय साहित्य का अविर्भाव युगीन परिस्थितियों के अनुसार हुआ है। भारतीय साहित्य में राष्ट्रीयता आदि-अनादिकाल से ही विद्यमान है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में इसका उल्लेख मिलता है। धार्मिक ग्रंथों वेद पुराण, रामायण, महाभारत आदि में भी राष्ट्रीयता के तत्व विद्यमान है। हिन्दी साहित्य के आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिककाल के काव्य में भी राष्ट्रीयता का स्वरूप उभरकर सामने आया पर आधुनिक युग के काव्य में राष्ट्रीयता का स्वर अधिक उभरकर आया, इसलिए कहा जाता है आधुनिक युग राष्ट्रीयता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। 19 वी शताब्दी में हमारे देश में अनेक परिवर्तनशील परिस्थिति का जन्म हुआ, जिसके फलस्वरूप इस युग में नवीन राष्ट्रीय चेतना का जन्म हुआ। सनè 1857 के क्रांति ने देश में बहुत बडा परिवर्तन ला दिया। यह क्रांति असफल रही पर देश की जनता में एक नयी आशा की किरण जगा गई। और आगे चलकर देश की शासन व्यवस्था ने लोगों को क्रांति करने पर मजबूर किया। ब्रिटिश सरकार के क्रूर नीति के कारण भारतीय जनता आक्रोश की भावना से भर गई और जगह-जगह उनके विरुद्ध आंदोलन होने लगे। इन्हीं आंदोलन और संस्थाओं ने लोगों में राष्ट्रीयता की भावना पैदा की। राष्ट्रव्यापी आंदोलन की चपेट में कोई नहीं बच सका, जिसकी चपेट में साहित्यकार भी आ गए।

राष्ट्रीयत शब्द लैटिन शब्द नेटèस से बना है जिसका अर्थ है जन्म लेना । यानि राष्ट्रीयता मनुष्य के जन्मभूमि को परिभाषित करने वाला शब्द है । राष्ट्रीयता की परिभाषा करना आसान नहीं है । आक्सफोर्ड डिक्शनरी में लिखा है – 'वह जाति जिसके एक ही पूर्वज हो, जो एक ही भाषा बोलता हो, जिनका इतिहास, एक संस्कृति हो जो एक ही शासित-सीमित राज्य भूमि में बसती हो राष्ट्र के अंतर्गत आती है' । एनसाइक्लोपीडिया, ब्रिटानिका के अनुसार – "राष्ट्रीयता मन की वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति की सर्वोपरि कर्तव्य निष्ठा राष्ट्र के प्रति अनुभव की जाती है" ।

हिन्दी साहित्य में राष्ट्र की भावना प्रमुख रूप से भारतेन्दुयुग से शुरु होते हुए द्विवेदी युग से गुज़रती हुई छायावादी युग में अपनी चरमसीमा पर पहुðच जाती है । यानि यह दौर ऐसा था कि राष्ट्रीयता की भावना में परिपूर्ण रचनाएं लिखी गई क्यों कि हमारा देश गुलाम था और अपने देश को आज़ाद करने के लिए इस तरह की रचनाएð रचे जा रही थी ।

भारत को आज़ादी दिलाने में सनè 1857 से लेकर 1947 तक अनेक कवियों ने अपना अमूल्य योगदान दिया । देश के प्रत्येक प्रन्त के साहित्यकार तथा कविगण अपने-अपने मातृभाषा में देश की जनता में राष्ट्रीयता की अलक जगा रहे थे जिसका प्रभाव हर तरफ छा रहा था । राष्ट्रीयता की कविताओं के संदर्भ में शिवकुमार मिश्र जी ने ठीक ही लिखा है – स्वतंत्रता संघर्ष के दिनों में करोड़ों देशवासियों ने इन रचनाओं को प्रभातफेरी में, जुलूस और जनसभाओं में सुना और गाया है । ये कविताएð, ये गीत और ये गज़ले कारावास के यातनाएð सहते स्वतन्त्रता सेनानियों के कंठों से फूटी है । फांसी के फंदे की ओर जाते हुए अमर शहीदों ने उन्हें गाया है और गुनगुनाए है । ये वें रचनाएð है जिन्होंने देशवासियों को राष्ट्र की स्वतन्त्रता के महायज्ञ में अपना सर्वस्व अर्पित करने की प्रेरणा प्रदान की है । राष्ट्र के कठिन क्षणों में आज भी उतनी ही जीवन्त और प्रेरणास्पद है, जितना तब थी, जब अग्निशिखाओं की तरह सुलगते और धधकती हुए स्वाधीनता संघर्ष में रत, स्वाधीनता के लक्ष्य की ओर बढते हुए राष्ट्र और राष्ट्रवासियों के पथ को आलोकित कर रही है । इन बातों से इतना तो स्पष्ट है कि भारत की आज़ादी में जितना योगदान अमर शहीदों, नेताओं और आमजनता का रहा है उतना ही योगदान कवियों का भी रहा है ।

हमारे साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से देशवासियों में राष्ट्रभक्ति एवं देशप्रेम को जगाने और अंग्रेज़ों के विरुद्ध लडने के लिए प्रेरित किया । इतिहास इस बात का साक्षी है कि अंग्रेज़ों के डेढ सौ वर्षों के अत्याचारी एवं दमनकारी शासन का उखाड फेंकने में भी साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । अंग्रेज़ों के अत्याचर में देशवासी त्रस्त थे, वे अपना गौरवशाली इतिहास तथा अपना स्वाभिमान एवं आत्माभिमान भूल रहे थे । ये सब देख साहित्यकार बहुत दु:खी थे । देश का पुननिर्माण करने तथा देशवासियों में देश के प्रति आत्मोसर्ग जगाने के लिए उन्होंने ओजसपूर्ण कविताएð लिखी । इन साहित्यकारों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, सुभद्राकुमारी चौहान, रामधारीसिंह दिनकर, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी आदि है । यहां हम मैथिलीशरण गुप्त के कविताओं में राष्ट्रवाद की चर्चा कर रहे हैं ।

मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय काव्यधारा के महान कवि एवं साहित्यकार है। शब्द के प्रति सच्ची निष्ठा तथा समर्पण की भावना उनकी काव्य सृष्टि में साफ झलकती है। इनकी कविताएं राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत है। राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य में मैथिलीशरण गुप्त जी की समूची काव्य-सृष्टि देश के प्रति समर्पन की भावाभिव्यक्ति, अतीत का गौरव-गान अगाध राष्ट्रभक्ति, स्वतन्त्रता तथा राष्ट्र उत्थान हेतु वीरता का युणगान, राष्ट्र के लिए त्याग, बलिदान समर्पन, संघर्ष, विद्रोह, क्रांति की भावना तथा राष्ट्रीय एकता और अखण्डता आदि के तहत उदात्त राष्ट्रीयता का परिचायक है।

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में भारतीय संस्कृति की व्यापक और प्रभावशाली अभिव्यक्ति हुई है, ऐसी अभिव्यक्ति कहीं देखने या सुनने का नहीं मिलती। राष्ट्रीयता की भावना उनके साहित्य में कूट-कूट कर भरी हुई है। इसलिए वे राष्ट्रकवि कहलाते है। इनका सम्पूर्ण साहित्य राष्ट्रप्रेम व देशभक्ति से ओत-प्रोत है। यानि इनका सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र को समर्पित है। इन्होंने साठ साल तक हिन्दी साहित्य की सेवा की है।

यानि राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी के लिए देशप्रेम की भावना सर्वोपरी था। उनका कहना था कि प्रत्येक व्यक्ति में अपने देश के प्रति आदर और गौरव होना चाहिए। अगर वह अपने देश से प्रेम नहीं करता तो उसका जीवन व्यर्थ है, उनकी यह पंक्तियां इस बात का उदाहरण है –

जिसको न निज गौरव तथा
निज देश का अभिमान है
वह नर नहीं, नर पशु निरा है
और मृतक समान है।

मैथिलीशरण गुप्त को पुनरुत्थानवादी कवि कहा जाता है। वे अपने देश के अतीत गौरव केवल देखते नहीं बल्कि अपनी कविताओं के माध्यम से देशवासियों तक पहुõचाते हैं। उनके द्वारा कहे गए शब्द राष्ट्रीय गौरव को जगाने तथा राष्ट्र के प्रति प्रेम व त्याग की भावना को प्रदर्शित करते हैं। मातृभूमि के महत्व एवं सुन्दरता को वे अपनी कविता में इस तरह वर्णन करते हैं –

नीलाम्बर परिधन हरित पट पर सुन्दर है,
सूर्यचन्द्र युग मुकुट मेखला रत्नाकर है।
नदियां प्रेम प्रवाह फूल तारे मंडल है।
बन्दी जन खगवृन्द शेष फन सिंहासन है।
करते अभिषेक पयोद हैं बलिहारी इस वेष की,
हे मातृभूमि। तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की "

मातृभूमि के महत्व एवं सुन्दरता के साथ-साथ उन्होंने भारत-भारती काव्य संग्रह में देश के प्राचीन भारत के उज्ज्वल पक्ष का वर्णन किया। इस वर्णन के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि कवि हमारे प्राचीन गौरवशाली इतिहास का महत्व बताकर निराश भारतवासियों को जागृत कर रहे हैं। यह बात इन पंक्तियों से स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है –

यद्यपि समय के फेर ने वे दिव्य गुण छोडे नहीं
हैं किन्तु अब भी देश में आदर्श कुछ थोडे नहीं
यदि जन्म लेते थे महात्मा भीष्म-तुल्य कभी यहां
तो जन्मते हैं कुछ दृढवत् लोककाव्य अभी यहां ।

भारतवासियों को जागृत करने के साथ-साथ उनमें आशा रूपी शक्ति का संचार भी करते हैं

भरत खण्ड के पुरुष अभी मर नहीं गए हैं
कर उनको वे कोटि-कोटि कर नहीं गए हैं
रोना धोना छोड उठो सब मंगल गाओ,
जाते हैं हम विजय हेतु तुम दर्द जगाओं ।

यानि यहां पर कवि भारतवासियों को जीवन में आनेवाली बाधाओं का डटकर मुकाबला करते हुए, आगे बढने का संदेश देते हैं । वे अपनी कविताओं के माध्यम से देश को मजबूत बताना चाहते हैं ।

मैथिलीशरण गुप्त ने भारत-भारती काव्यसंग्रह में एक और अतीत का उज्ज्वल रूप प्रस्तुत किया, वहीं दूसरी ओर वर्तमान दुरावस्था का भी बडा वेदनादायक रूप को भी दिखाया । गुप्त जी ने देश के भूत, वर्तमान और भविष्यत समस्याओं पर भी अपने विचार प्रकट किए है । हमारा इतिहास कितना सुन्दर और वीरता से भरा था आज हम इतने निराशा के वातावरण में क्यों जूझ रहे हैं । हमारी वीरता अगर हमारी हालात ऐसी ही रही तो आगे हमारे देश का भविष्य अंधकार ही होगा इस पर सभी को विचार करना होगा । यानि कवि को जन-जीवन में कर्म, उत्साह, पौरुष एवं उत्तेजना को फैलाने का काम किया । वे कहते भी है –

हम कौन थे, क्या हो गए हैं,
और क्या होंगे अभी
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी ।

इस प्रकार हम देखते हैं राष्ट्र की संकटकालीन स्थिति में मैथिलीशरण गुप्त की कविता का योगदान विशेष महत्वपूर्ण रहा है । उनके हृदय में मातृभूमि और देश के प्रति जो विचार है वह उनके साहित्य में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं । उनकी अधिकांश कविताएं राष्ट्रीय है यानि उनका सम्पूर्ण जीवन ही राष्ट्रीय भाव मय है । अंत में उन्हीं के शब्दों में कहना चाहूंगी –

संदेश यहां मैं नहीं स्वर्ग का लाया
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया ।

****